

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी मुजफ्फरपुर

BA Part -II HISTORY (Honours) मध्यकालीन भारत

बलबन की उपलब्धि

(1266-1286)

दिल्ली सल्तनत की सत्ता को हासिल करने वाला बलबन भी तुर्की की इलबरी जाति का था। प्रारम्भिक युवा-काल में उसे मंगोल बन्दी बना कर बगदाद ले गये थे। वहाँ बसरा के ख्वाजा जमालुद्दीन नामक एक धर्मनिष्ठ एवं विद्वान् व्यक्ति ने उसे खरीद लिया। ख्वाजा जमालुद्दीन अपने अन्य दासों के साथ उसे 1232 ई. में दिल्ली ले आया। इन सबको सुल्तान इल्तुतमिश ने खरीद लिया। सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने उसे सुल्तान का व्यक्तिगत सेवक नियुक्त किया परन्तु गुण एवं योग्यता के बल पर वह उच्चतर पदों एवं श्रेणियों को प्राप्त करता गया।

बलबन ने अपने आप को फिरदौसी के शाहनामा में वर्णित अफरासियाब वंशज घोषित किया था।

नासिरुद्दीन महमूद के साथ ही इल्तुतमिश के शम्सी वंश का अंत हुआ एवं बलबनी वंश का सल्तनत पर अधिकार हो गया। इसका वास्तविक नाम बहाउद्दीन बलबन था। बलबन ने 20 वर्ष तक वजीर की हैसियत से तथा 20 वर्ष तक सुल्तान के रूप में शासन किया।

बलबन एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो सुल्तान न होते हुए भी सुल्तान के छत्र का उपयोग करता था। वह पहला शासक था। जिसने सुल्तान के पद और अधिकारियों के बारे में विस्तृत रूप से विचार प्रकट किये। वास्तव में बलबन दिल्ली सल्तनत में पहली बार राजत्व के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

बलबन भी तुर्कान-ए-चहलगानी का सदस्य था, रजिया के समय अमीर-ए-शिकार का सदस्य था तथा बहरामशाह के समय अमीर-ए-आखूर के पद पर, तथा अलाउद्दीन मसूदशाह के समय अमीर-ए-हाजिब के पद पर था। नासिरुद्दीन महमूद के समय बलबन नायब-ए-ममलिकात के पद पर था। बलबन ने नवरोज उत्सव शुरू करवाया, जो फारसी (ईरानी) रीति-रिवाज पर आधारित था।

बलबन राजपद के दैवी सिद्धांत को मानता था तथा राजा को पृथ्वी पर नियाबते खुदायी (ईश्वर की छाया) मानता था। शासन को ईरानी आदर्श के रूप में सुव्यवस्थित किया।

इसने अपने सिक्कों पर खलीफा का नाम खुदवाया। बलबन ने अपने दरबार के नियम और साज-सज्जा में ईरानी शैली का प्रयोग किया।

बलबन की समस्यायें-

जब बलबन शासक बना तो उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा जो इस प्रकार हैं-

तुर्कान-ए-चहलगानी की महत्वकांक्षा।

सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा स्थापित करना।

मेवातियों व राजपूतों का विद्रोह।

मंगोलों का आक्रमण।

उपर्युक्त समस्याओं का समाधान चहलगानी की शक्ति को तोड़ना था। इसके लिये उसने अनेक कदम उठाये।

समस्याओं का समाधान-

तुर्कान ए चहलगानी की महत्वकांक्षा का दमन- बलबन ने चहलगानी के अनेक विद्रोही अधिकारियों की हत्या करवा दी इसमें उसका भतीजा भी था। कुछ अधिकारियों को दिल्ली से दूर भेज दिया।

सुल्तान पद की प्रतिष्ठा स्थापित करना- बलबन ने मुस्लिम राजत्व का सिद्धांत प्रतिपादित किया। ऐसा करने वाला वह भारत का प्रथम मुस्लिम सुल्तान था, उसने सुल्तान पद की प्रतिष्ठा के लिये जिल्ले-इलाही (अल्लाह का दैवी प्रकाश) तथा नियाबत-ए-खुदाई (अल्लाह की कृपा) जैसी उपाधियां धारण की। तथा सुल्तान के पद को पैगंबर के बाद रखा। बलबन के दरबार में शराब पीने व हँसी-मजाक करने पर पाबंदी लगाई। उसने भव्य दरबार का आयोजन किया तथा दरबारी शिष्टाचार के पालन हेतु अमीर-ए-हाजिब को कठोरता से कदम उठाने को कहा। इसने अपने दरबार में सिजदा (घुटनों के बल पर सिर झुकाना) एवं पैबोस (सुल्तान के पाँव चूमना) प्रथा की शुरुआत की थी। बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए रक्त एवं लौह की नीति अपनाई। बलबन ने राजत्व सिद्धांत की दो मुख्य विशेषताएं बताई-

सुल्तान का पद ईश्वर के द्वारा प्रदान किया गया होता है।

सुल्तान का निरंकुश होना आवश्यक है। इसके अनुसार सुल्तान पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है और उसका स्थान केवल पैगंबर के बाद है। इसने शासन को ईरानी आदर्श के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया था।

मेवातियों व राजपूतों के विद्रोह का दमन- मेवाती अजमेर क्षेत्र के आस - पास का क्षेत्र था। मेवाती राजपूतों की सहायता से लूटपाट की नीति अपनाते थे। जिससे सल्तनत को आर्थिक हानी तथा कानून व्यवस्था की समस्या से ग्रस्त कर दिया था। बलबन ने इनके खिलाफ रक्त व लौह की नीति अपनाई थी।

बलबन ने दिल्ली से बाहर घने जंगलों को कटाकर चारों दिशाओं में चार किले - जलाली, काम्पिली, पटियाली, भोजपुर बनवाये थे। इन किलों पर अफगान सैनिकों को नियुक्त किया तथा चारों दिशाओं से मेवातियों को घेरकर क्रूरतापूर्ण उनका दमन किया। बलबन ने चहलगानी को संदेश देने के लिये भी अपने कुछ अमीरों को जैसे मलिक बकबक को सभी के सामने 100 कोड़े लगाये। मलिक हैबत खाँ को साधारण से अपराध पर कठोर दंड दिया। इसी प्रकार बंगाल अभियान में असफल हुये अमीरों मलिक तार्गी, मलिक अमीन खाँ को कठोर दंड दिया। इसी प्रकार बंगाल अभियान में असफल हुये अमीरों मलिक तार्गी, मलिक अमीन खाँ को कठोर दंड दिया।

बंगाल के विद्रोह का समाधान- बलबन के समय तुगरिल खाँ ने जो बंगाल का इक्तेदार था व बलबन का दास था , ने वद्रोह किया व स्वतंत्र हो गया। बलबन ने मलिक अमीन खाँ को विद्रोह को दबाने भेजा, इसके असफल होने पर अमीन खाँ को दंडित किया। आगे बलबन ने मलिक तार्गी को भेजा जो तुगरिल से मिल गया। बलबन क्रोधित हुआ तथा स्वयं अभियान किया। यह बलबन का एकमात्र ऐसा अभियान था जब वह दिल्ली से बाहर गया था। बलबन ने क्रूरता से विद्रोह का दमन किया। तुगरिल खाँ व तार्गी तथा उनके वफादारों का सामूहिक कत्लेआम किया। इसके बाद बलबन ने छोटे पुत्र बुगरा खाँ को बंगाल का इक्तेदार बनाया। उसने विद्रोह करने वाले को चेतावनी भी दी।

मंगोलों के आक्रमण का समाधान- मंगोल समस्या के समाधान के लिये बलबन ने दोहरी नीति अपनायी।

कूटनीति- मंगोल आक्रमण में उपहार सहित अनेक दूत भेजे और मित्रता स्थापित करनी चाही।

सैन्य प्रबंध - बलबन ने मंगोलों को रोकने के लिये निम्नलिखित किलों पर अपने दोनों पुत्रों को स्थापित किया-

लाहौर, मुल्तान, दीपालपुर के किलों पर बड़े पुत्र मुहम्मद को बड़ी सेना के साथ स्थापित किया।

सुनाम,समाना, भटिण्डा के किलों पर छोटे पुत्र बुगरा खां को स्थापित किया।

इन सबके बावजूद मंगोल व्यास नदी तक का क्षेत्र जीतने में सफल हो जाते हैं। 1285 ई. में तमर के नेतृत्व में मंगोलों ने आक्रमण किया तथा इसमें शहजादा मुहम्मद मारा गया बलबन ने मुहम्मद को शहीद-ए-आजम की उपाधि दी।

बलबन संगठनकर्ता के रूप में-

बलबन ने सल्तनत का संगठन सुचारु रूप से किया था। उसने दीवान-ए-आरिज नामक सैन्य विभाग की स्थापना की। दीवाने-बरीद नामक गुप्तचर विभाग स्थापित किया।

न्यायप्रिय नीति-

बलबन ने न्याय पर अत्यधिक बल दिया हालांकि उसने रक्त की शुद्धता जैसी नश्लवादी नीति अपनाई तथा प्रशासन में केवल उच्च कुल के तुर्की मुस्लिमों को ही सामिल किया। लेकिन आम जनता के लिये वह भेदभाव रहित न्याय करता था। अतः क्रूर होते हुये भी जनता में लोकप्रिय था।

बरनी ने अपने ग्रंथ में बलबन के बारे में लिखा है “जब भी मैं निम्न कुल के आदमी को देखता हूँ, मेरी आँखे गुस्से से लाल हो जाती हैं और हाथ तलवार पर चला जाता है।”

ईश्वरी प्रसाद के अनुसार - बलबन उत्तम प्रकार का अभिनेता था।

बलबन के काल में जागीरों की व्यवस्था-

बलबन ने उन सभी जागीरों की जाँच कराई जो विभिन्न व्यक्तियों की सैनिक सेवा के बदले शासकों द्वारा दी जाती थी।

जागीरों से आय एकत्र करने का अधिकार सरकारी कर्मचारियों को दिया गया और नकद धन देने के आदेश दिये गये। किन्तु सैनिकों को वेतन के स्थान पर पहले की भाँति भूमि प्राप्त होती रही। उसके समय में वजीर के पद का महत्त्व घट गया और नायब जैसा कोई अधिकारी न रहा अर्थात् नायब के पद को खत्म कर दिया।

उसने ऐसे सैनिकों को जो सेवा के योग्य नहीं रह गये थे, पेंशन देकर सेवा मुक्त किया।

चालीसा दल का दमन तथा गुप्तचर विभाग की स्थापना-

बलबन ने इल्तुतमिश द्वारा बनाये गये चालीस सरदारों के दल को समाप्त किया। बलबन के शासन की सफलता का मुख्य श्रेय उसका गुप्तचर विभाग था। गुप्तचर विभाग की स्थापना सामंतों की गतिविधियों पर निगरानी हेतु की गई थी।

दीवान-ए-आरिज विभाग की स्थापना-

बलबन ने पश्चिमोत्तर सीमा पर मंगोलों के आक्रमण से रक्षा के लिए एक शक्तिशाली सेना का संगठन किया तथा एक नये सैन्य विभाग दीवान-ए-आरिज की स्थापना की।

लौह एवं रक्त-

अपने विरोधियों के प्रति बलबन ने कठोर लौह एवं रक्त की नीति का अनुसरण किया। ऐसी तानाशाही स्थापित की जिसकी स्थिरता शासक के व्यक्तिगत बल पर निर्भर करती हो।

विद्वानों को संरक्षण

बलबन के दरबार में फारसी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो एवं अमीर हसन रहते थे।

1286 ई. में बलबन की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत का गुलाम वंश पतन की ओर अग्रसर हो गया इसके बाद के सुल्तान पलवल के राजत्व की नीति को कायम नहीं रख सके अंततः खिलजी वंश की स्थापना के साथ गुलाम वंश का अंत हो गया। डा.ए.हबीबुल्ला ने बलबन के शासनकाल को सुदृढता का युग कहा है। तथा बलबन को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संगठन करता माना है।

compiled and edited by different source

Dr. Amiya Anand, Assistant Professor

Dept. Of History R.N. College, Hajipur,